

डेली करेंट अफेयर्स

UPSC & PCS

के लिए महत्त्वपूर्ण समसामयिकी

06/10/2026

- राचकोंडा किला
- फ्लीट सपोर्ट शिप-1
- यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड
- प्लेग
- सदर्न राइट व्हेल
- देबरीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
- ग्रेट इंडियन बस्टर्ड
- अभ्यास माउंटेन गार्जियन 2026
- जंपिंग जीन
- संत रमेश बाबा

दिल्ली केंद्र : 636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-09

प्रयागराज केंद्र : महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.

राचकोंडा किला

Deccan Chronicle

Govts Failed To Develop Rachakonda Fort As Tourist Spot

The hillock on which Rachakonda Fort was located near Rachakonda Thanda in Sansathan Narayanapur mandal in Yadadri-Bhongir district— DC File.



चर्चा में क्यों

तेलंगाना के राचकोंडा किले की विरासत संबंधी संभावनाओं की उपेक्षा और उपयोग में कमी को लेकर चिंताओं के कारण इसने ध्यान आकर्षित किया है।

ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संदर्भ

- राचकोंडा किला तेलंगाना के यादाद्रि भुवनगिरि ज़िले के राचकोंडा गाँव में स्थित एक मध्ययुगीन पहाड़ी किला है।
- यह किला रेचर्ला नायकों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है जो काकतीय सत्ता के पतन के बाद प्रमुखता में आए।
- परंपरागत रूप से 14वीं सदी में राचकोंडा दुर्ग की स्थापना का श्रेय रेचर्ला सिंगमा नायक को दिया जाता है।
- दक्कन में अपने विस्तार के दौरान बहमनी सल्तनत ने 1433 ईस्वी में इस किले पर कब्ज़ा कर लिया।

विरासत संबंधी चिंताएँ

- किला काफी हद तक खंडहर बन चुका है और उसके अवशेषों के कुछ हिस्से वनस्पति से ढके हुए हैं।
- इसकी वर्तमान स्थिति मध्ययुगीन स्मारकों के विरासत संरक्षण, पर्यटन अवसंरचना व जिम्मेदार प्रबंधन के महत्व को रेखांकित करती है।

वास्तुशिल्पीय विशेषताएँ

- यह किला लगभग 6 वर्ग किमी. में फैला है और एक चट्टानी पहाड़ी पर बना है।
- यह मध्ययुगीन हिंदू किला वास्तुकला का एक उदाहरण है और इसमें प्रवेश-द्वार, मंदिर, पत्थर की संरचनाएँ तथा जल-संग्रह संरचनाएँ हैं।
- इसकी विशाल चिनाई में बड़े-बड़े अनियमित पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है जिन्हें बिना किसी पारंपरिक मसाले/गारे (मोर्टार) के आपस में जोड़ा गया है।
- किले में दो संकेंद्रित दीवारें हैं जिनके प्रत्येक तरफ़ चार द्वार हैं।
- परिसर में ऐतिहासिक श्री राम मंदिर और कई शैव मंदिर स्थित हैं।

फ्लीट सपोर्ट शिप-1


The Times of India

Rajnath launches India's first fleet support ship 'Surya' at Visakhapatnam; witnesses delivery of 2,000th

... defence minister Rajnath Singh on Tuesday launched 'Surya', the country's first indigenously-built fleet support ship (FSS-1), laid the...

चर्चा में क्यों

रक्षा मंत्री हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड, विशाखापत्तनम में फ्लीट सपोर्ट शिप-1 (FSS-1) का जलावतरण करने वाले हैं। यह स्वदेशी नौसैनिक पोत निर्माण में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

रणनीतिक भूमिका

- FSS-1 भारतीय नौसेना के लिए बनाए जा रहे पाँच फ्लीट सपोर्ट शिप में पहला है।
- फ्लीट सपोर्ट शिप समुद्र में रहते हुए पुनःआपूर्ति करने वाले पोतों के रूप में कार्य करते हैं जिससे युद्धपोत लंबे समय तक समुद्र में तैनात रह सकते हैं।
- ये समुद्र में नौसैनिक जहाज़ों को ईंधन, पानी, गोला-बारूद, भंडार, खाद्य सामग्री एवं कर्मी उपलब्ध करा सकते हैं।
- ये जहाज़ बहुउद्देश्यीय हेलीकॉप्टरों को भी सहायता दे सकते हैं और मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR) अभियानों में भाग ले सकते हैं।

स्वदेशीकरण का महत्व

- पाँच बेड़ा सहायता पोत हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (HSL), विशाखापत्तनम द्वारा विकसित किए जा रहे हैं, जो एक सरकारी स्वामित्व वाली जहाज निर्माण कंपनी है।
- यह कार्यक्रम भारत में इस श्रेणी के पोतों के पहले स्वदेशी निर्माण का प्रतिनिधित्व करता है और नौसैनिक रसद में आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करता है।

तकनीकी विशेषताएँ

- यह जहाज़ डीज़ल प्रणोदन, एकल-शाफ़्ट विन्यास व नियंत्रित-पिच प्रोपेलर का उपयोग करता है।
- इसकी लंबाई लगभग 200 मीटर, चौड़ाई 25 मीटर व ड्राफ्ट 10 मीटर है।
- इसका विस्थापन लगभग 44,000 टन और गति 20 नॉट है।
- इसमें लगभग 190 कर्मी तैनात होते हैं।
- माल-भंडारण क्षेत्रों में दोहरे तल और दोहरे ढाँचे की व्यवस्था से जहाज़ की उत्तरजीविता एवं परिचालन सहनशक्ति बढ़ती है।

यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड



चर्चा में क्यों

यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड (UCIL) ने हाल ही में अपनी हीरक जयंती मनाई, जिसमें भारत में घरेलू यूरेनियम खनन एवं परमाणु ईंधन चक्र में इसकी भूमिका को रेखांकित किया गया।

संस्थागत परिचय

- UCIL परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) के अधीन एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (CPSE) है।
- इसकी स्थापना 4 अक्टूबर, 1967 को हुई थी और यह भारत के परमाणु कार्यक्रम के लिए यूरेनियम अयस्क के खनन एवं प्रसंस्करण की जिम्मेदार प्रमुख संस्था है।
- UCIL मुख्यत: दाबित भारी जल रिएक्टरों (PHWRs) के लिए यूरेनियम की आपूर्ति करता है।

खनन एवं प्रसंस्करण नेटवर्क

- UCIL झारखंड में बागजाता, जादूगोड़ा, भाटिन, नरवापहाड़, तुरामडीह व मोहुलडीह में छह भूमिगत खदानें संचालित करता है।
- यह झारखंड में बंधुहुरंग ओपन-पिट खदान भी संचालित करता है।
- झारखंड से प्राप्त यूरेनियम अयस्क का प्रसंस्करण जादूगोड़ा एवं तुरामडीह स्थित संयंत्रों में किया जाता है।

- UCIL आंध्र प्रदेश के तुम्मलापल्ली में एक भूमिगत खदान एवं प्रसंस्करण संयंत्र भी संचालित करता है।

परमाणु ईंधन चक्र में महत्व

- UCIL भारत की घरेलू यूरेनियम आपूर्ति की सुरक्षा में योगदान देता है और इस तरह देश के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को समर्थन प्रदान करता है।
- इसकी परिचालन विशेषज्ञता में भूमिगत और खुली खदानों में खनन, अयस्क प्रसंस्करण, विकिरण से सुरक्षा, व्यावसायिक सुरक्षा व पर्यावरण प्रबंधन शामिल हैं।

प्लेग

The Economist

The plague may have escaped from a lab in Siberia

A researcher's death at a Siberian plague research institute sparks global concern about potential lab leaks and Russia's biological weapons...



चर्चा में क्यों

साइबेरिया में न्यूमोनिक प्लेग का एक संदिग्ध मामला सामने आने के बाद जनस्वास्थ्य संबंधी सावधानियाँ बढ़ा दी गईं। इससे पहले गंभीर निमोनिया से एक प्रयोगशाला कर्मी की मृत्यु हो गई थी।

रोगकारक और संक्रमण का प्रसार

- प्लेग, येर्सिनिया पेस्टिस (Yersinia pestis) नामक जीवाणु से होने वाला एक संक्रामक रोग है। यह जीवाणु प्राकृतिक रूप से छोटे स्तनधारियों एवं उनके पिस्सुओं में पाया जाता है।
- जानवरों के बीच संक्रमण आमतौर पर संक्रमित पिस्सुओं के माध्यम से फैलता है।
- मनुष्यों को संक्रमित पिस्सू के काटने, संक्रमित जानवरों के ऊतकों या शारीरिक द्रवों के संपर्क में आने या न्यूमोनिक प्लेग में श्वसन कणों को साँस के साथ अंदर लेने से प्लेग हो सकता है।

प्रमुख रूप

- ब्यूबोनिक प्लेग इसका सबसे आम रूप है। पिस्सू के काटने से संक्रमण होने के बाद इसमें लसीका ग्रंथियों में दर्दनाक सूजन आ जाती है जिन्हें बूबो (Buboes) कहा जाता है।
- न्यूमोनिक प्लेग इसका सबसे अधिक घातक रूप है। निकट एवं लंबे समय तक संपर्क के दौरान यह श्वसन बूंदों या कणों के माध्यम से फैल सकता है।
- सेप्टीसीमिक प्लेग तब होता है जब वाई. पेस्टिस (Y. pestis) रक्तप्रवाह में तेजी से बढ़ता है और प्लेग के किसी अन्य रूप से विकसित हो सकता है।

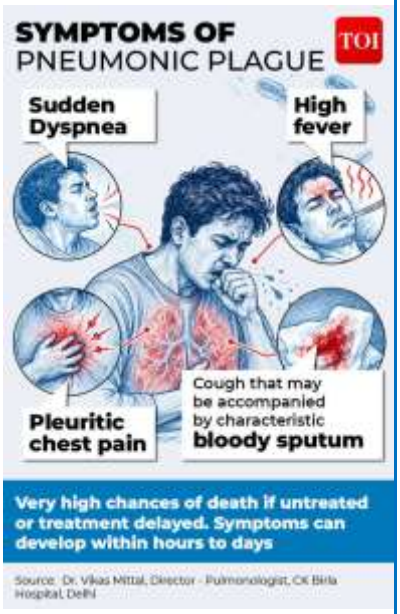

नैदानिक एवं जन-स्वास्थ्य संबंधी महत्त्व

- गिल्टीयुक्त प्लेग (Bubonic Plague) में प्राय: बुखार, ठंड लगना, बदन दर्द, कमजोरी व लसीका-ग्रंथियों में दर्दनाक सूजन होती है।
- फुफ्फुसीय प्लेग (Pneumonic Plague) से तेज़ बुखार, खाँसी, साँस लेने में कठिनाई और खून मिला बलगम हो सकता है; इसके लक्षण बहुत तेज़ी से विकसित हो सकते हैं।
- रक्तपूतितापी प्लेग (Septicaemic Plague) से त्वचा में रक्तस्राव, नीलिमा (Cyanosis) एवं ऊतक परिगलन (Tissue Necrosis) हो सकता है।
- आम जनता के लिए प्लेग का कोई टीका नियमित रूप से अनुशंसित नहीं है जबकि समय पर एंटीबायोटिक उपचार और सहायक चिकित्सा प्रभावी हो सकते हैं।

सदर्न राइट व्हेल

The Business Standard

Scientists investigate unusual deaths of baby whales in Argentina

Dozens of dead calves have washed ashore around Peninsula Valdes, a major breeding ground for southern right whales in Chubut province.



चर्चा में क्यों

असामान्य रूप से गंभीर मृत्यु-दर वाले मौसम के बाद वैज्ञानिक अर्जेंटीना के पैटागोनिया तट पर सदर्न राइट व्हेल के कई बच्चों की मौतों की जाँच कर रहे हैं।

प्रजाति का परिचय

- सदर्न राइट व्हेल 'यूबालेना ऑस्ट्रेलिस (Eubalaena australis)' एक बेलीन व्हेल है और राइट व्हेल की मान्यता प्राप्त तीन प्रजातियों में से एक है।
- इसकी पहचान सिर पर कठोर उभारों, पृष्ठीय पंख से रहित चौड़ी पीठ और लंबे व मेहराबयुक्त मुँह से होती है।
- इसका शरीर आम तौर पर गहरे धूसर या काले रंग का होता है और कभी-कभी पेट पर सफेद धब्बे होते हैं।

भौगोलिक वितरण

- यह प्रजाति दक्षिणी गोलार्ध में प्राय: 20°S से 60°S अक्षांशों के बीच पाई जाती है।
- यह प्राय: सुरक्षित खाड़ियों में रहती है और गर्मियों के दौरान ठंडे अंटार्कटिक जलक्षेत्रों में चली जाती है।

- सदर्न राइट व्हेल मई से नवंबर तक दक्षिण अफ्रीका के तट पर आती हैं।

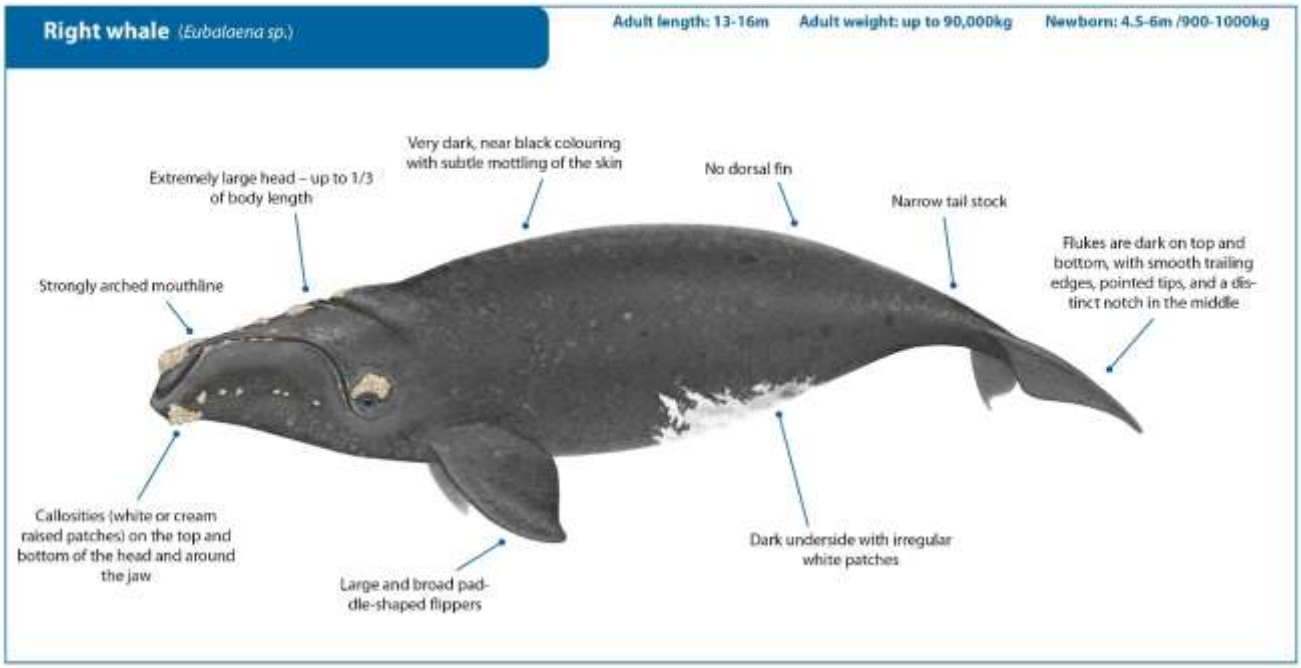

आहार पारिस्थितिकी एवं संरक्षण

- यह व्हेल छानकर भोजन करती है। यह सतह के पास के पानी को छानती है और अपने बेलीन प्लेटों से शिकार को रोककर रखती है।
- इसके आहार में कॉपेपोड और खुले समुद्र में रहने वाले क्रस्टेशियन के लार्वा शामिल हैं, इसलिए इसका भोजन मुख्यतः प्लवक पर आधारित है।
- IUCN की लाल सूची सदर्न राइट व्हेल को संकटमुक्त श्रेणी में रखा गया है।

चर्चा में रहे आज के अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे

चर्चित स्थल

देबरीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य

The New Indian Express

New homestays, visitor facilities inaugurated at Debrigarh wildlife sanctuary

A total of two new log houses, with eight-bed dormitory facilities, have also been developed at Debrigarh Nature Camp to cater to larger...



चर्चा में क्यों

ओडिशा ने देबरीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य में समुदाय-प्रबंधित पारिस्थितिकी-पर्यटन अवसंरचना के अंतर्गत आवास एवं आगंतुक सुविधाओं का विस्तार किया है।

भौगोलिक और पारिस्थितिक परिवेश

- देबरीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य ओडिशा के बरगढ़ ज़िले में महानदी पर स्थित हीराकुंड बाँध के निकट स्थित है।
- यह अभयारण्य लगभग 347 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है और यहाँ मिश्रित तथा शुष्क पर्णपाती वन प्रमुख रूप से पाए जाते हैं।
- महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों में साल, आसन, बीजा, आँवला व धौरा शामिल हैं।

जैव-विविधता का परिचय

- महत्वपूर्ण स्तनधारियों में भारतीय तेंदुआ, भालू, चौसिंगा, सांभर, गौर, जंगली सूअर और ढोल शामिल हैं।
- यह अभयारण्य सर्दियों के दौरान कई प्रवासी पक्षियों को भी आश्रय देता है जिनमें सर्पगरुड़, रेड-वेंटेड बुलबुल, ड्रोंगो और ओरिएंटल व्हाइट-

ऐतिहासिक और संरक्षण संबंध

- देबरीगढ़ का संबंध स्वतंत्रता सेनानी वीर सुरेंद्र साई से है। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध उनके विद्रोह के दौरान बरापथरा स्थित उनका ठिकाना अभयारण्य के भीतर था।
- महानदी नदी पर बनी एक प्रमुख बहुउद्देशीय परियोजना, हीराकुंड बाँध से इसकी निकटता इसके भौगोलिक महत्व को बढ़ाती है।

	आई शामिल हैं।	
पर्यावरण	**ग्रेट इंडियन बस्टर्ड** Hindustan Times From the edge of extinction, two captive-bred Great Indian Bustards released into wild in Rajasthan | India News Not very long ago, the Great Indian Bustard (GIB) ranged across a vast swathe of India, from Punjab in the north to Tamil Nadu in the south.  **चर्चा में क्यों** संरक्षण प्रयासों के तहत राजस्थान के जैसलमेर स्थित डेजर्ट नेशनल पार्क के सैम इलाके में कैप्टिव-ब्रेड (Captive-bred) वाले दो नर ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (GIB) को जंगल में छोड़ा गया। **आवास एवं वितरण** • ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, जिसे स्थानीय रूप से गोडावण कहा जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप का एक बड़ा स्थलीय पक्षी है और यहीं का स्थानिक है। • इसकी बची हुई मुख्य आबादी थार मरुस्थल में, विशेषकर राजस्थान के जैसलमेर एवं बाड़मेर जिलों में केंद्रित है। • इसके अन्य महत्वपूर्ण आवास गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में हैं। • यह मुख्य रूप से शुष्क घास के मैदानों और झाड़ियों वाले क्षेत्रों में रहता है जिन्हें कृषि विस्तार व विकास से खतरा है। **भौतिक और पारिस्थितिक विशेषताएँ** • GIB दुनिया के सबसे भारी उड़ने वाले पक्षियों में से एक है। सबसे भारी पक्षियों का वजन 15 किलोग्राम तक होता है। • इसकी शारीरिक मुद्रा क्षैतिज होती है, टाँगें लंबी और बिना पंखों की होती हैं तथा सिर पर काला मुकुट होता है। नर पक्षियों की छाती पर एक काली पट्टी भी होती है। • इसका जीवनकाल लगभग 12–15 वर्ष होता है। यह अवसर के अनुसार घास के बीज, कीड़े, छोटे कृंतक और सरीसृप खाता है।

संरक्षण स्थिति

- इस प्रजाति को आईयूसीएन की लाल सूची में अतिसंकट ग्रस्त के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- संरक्षण प्रयासों में अब कैप्टिव-ब्रेड और उसके बाद उपयुक्त प्राकृतिक आवासों में पक्षियों को छोड़ने पर अधिक जोर दिया जा रहा है।
- इस प्रजाति का खुले घास के मैदानों वाले पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर होना इसके पुनरुद्धार के लिए आवास संरक्षण और विकास के दबावों को कम करना केंद्रीय बनाता है।

रक्षा

अभ्यास माउंटेन गार्जियन 2026

DD News

India, UAE Begin Joint Military Exercise Mountain Guardian 2026

The India-UAE Joint Military Exercise Mountain Guardian 2026 commenced today at the Foreign Training Node in Chaubatia, Uttarakhand.



चर्चा में क्यों

भारत-यूएई का संयुक्त सैन्य अभ्यास 'एक्सरसाइज माउंटेन गार्जियन 2026' उत्तराखंड के चौबटिया स्थित विदेशी प्रशिक्षण केंद्र में संपन्न हुआ।

सैन्य सहयोग

- यह अभ्यास भारतीय सेना और संयुक्त अरब अमीरात के सशस्त्र बलों के बीच किया जाता है जिसमें पर्वतीय युद्ध पर विशेष जोर दिया जाता है।
- इसके उद्देश्यों में दोनों सेनाओं के बीच पारस्परिक संचालन क्षमता, आपसी समझ एवं परिचालन सहयोग को बेहतर बनाना शामिल है।
- भारतीय दल में भैरव बटालियन के सैनिकों के साथ महिला अधिकारी और महिला सैनिक भी शामिल हैं।

प्रशिक्षण के घटक

- इस अभ्यास में संयुक्त योजना, सामरिक अभ्यास, निशानेबाजी प्रशिक्षण और निगरानी ग्रिड की स्थापना शामिल है।
- सैनिक ड्रोन संचालन, रॉक क्लाइम्बिंग, बाधा प्रशिक्षण और शारीरिक

	सहनशक्ति का प्रशिक्षण भी करते हैं। • प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी-सक्षम अभियान तथा कठिन पर्वतीय भूभाग के लिए रणनीतियों, तकनीकों एवं प्रक्रियाओं का आदान-प्रदान शामिल है। **रणनीतिक महत्व** • यह अभ्यास भारत व संयुक्त अरब अमीरात के बीच सैन्य सहयोग को मजबूत करता है और चुनौतीपूर्ण पर्वतीय वातावरण में अभियानों के लिए तैयारी को बेहतर बनाता है। • यह दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग और रणनीतिक विश्वास को भी मजबूत करता है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

जंपिंग जीन

Earth.com

Jumping genes may explain how ants became so diverse after dinosaurs died



Ants branched into thousands of new species after the dinosaurs died, and a new study links that burst to jumping genes in their DNA.

चर्चा में क्यों

एक अध्ययन ने डायनासोरों के विलुप्त होने के बाद चींटियों के हज़ारों प्रजातियों में विविधीकृत होने को जंपिंग जीन की विकासवादी भूमिका से जोड़ा है।

वैज्ञानिक अवधारणा

- जंपिंग जीन, जिन्हें वैज्ञानिक भाषा में ट्रांसपोज़ेबल एलिमेंट्स (TEs) या ट्रांसपोज़ॉन कहा जाता है, DNA अनुक्रम हैं जो जीनोम में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकते हैं।
- ये प्रोकैरियोट्स व यूकैरियोट्स, दोनों में व्यापक रूप से पाए जाते हैं और जीनोम का एक बड़ा हिस्सा हो सकते हैं।
- ट्रांसपोज़ॉन मानव जीनोम का लगभग 50% और कॉर्न जीनोम का 90% तक हिस्सा होते हैं।

वैज्ञानिक अनुप्रयोग

- ट्रांसपोज़ॉन का उपयोग प्रयोगशालाओं में उत्परिवर्तनजनन, ट्रांसजेनिसिस और जीन थेरेपी के लिए किया जा सकता है।
- पर्यावरणीय तनाव कुछ जीवों में ट्रांसपोज़ॉन की गतिविधि बढ़ा सकता है और संभावित रूप से अनुकूलनकारी उत्परिवर्तनों में योगदान दे सकता है।

वर्गीकरण और जैविक प्रभाव

- गतिशीलता की प्रक्रिया के आधार पर ट्रांसपोज़ॉनों को मोटे तौर पर रेट्रोट्रांसपोज़ॉन और डीएनए ट्रांसपोज़ॉन में वर्गीकृत किया जाता है।
- गतिशीलता के लिए दूसरों पर निर्भरता के आधार पर वे स्वायत्त या गैर-स्वायत्त हो सकते हैं।

	• ट्रांसपोज़ॉन जीन या जीन नियमन को बाधित कर सकते हैं और हीमोफीलिया, हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिया तथा कैंसर जैसी स्थितियों से जुड़े पाए गए हैं। • साथ ही, वे आनुवंशिक विविधता और विकासवादी विविधता उत्पन्न कर सकते हैं। **जीनोम का नियमन** • जीव डीएनए मिथाइलेशन और हिस्टोन संशोधनों जैसी एपिजेनेटिक प्रक्रियाओं के माध्यम से ट्रांसपोज़ॉन की गतिविधि को नियंत्रित करते हैं। • ट्रांसपोज़ॉन-समृद्ध क्षेत्र प्राय: संघनित होकर हेटेरोक्रोमैटिन में बदल जाते हैं जिससे प्रतिलेखन तंत्र की पहुँच सीमित हो जाती है। • piRNA, miRNA एवं siRNA सहित RNA हस्तक्षेप तंत्र भी ट्रांसपोज़ॉन को निष्क्रिय कर सकते हैं।

उत्तर प्रदेश विशेष

संत रमेश बाबा

Organiser Weekly

[Padma Shri Sant Ramesh Baba passes away: A life of devotion, Gau Seva and the preservation of Braj's spiritual legacy]

Padma Shri awardee and Braj Sant Ramesh Baba passed away in Barsana, leaving behind a legacy of Gau Seva and Braj conservation.



चर्चा में क्यों

पद्म श्री से सम्मानित, मान मंदिर, बरसाना के संस्थापक संत रमेश बाबा का 90 वर्ष की आयु में गहवर वन क्षेत्र स्थित अपने आश्रम में निधन हो गया।

ब्रज और समाज सेवा

- वे 1953 में 14 वर्ष की आयु में ब्रज आए और सात दशकों से अधिक समय तक इसकी धार्मिक एवं पारिस्थितिक विरासत के संरक्षण के लिए समर्पित रहे।
- उन्होंने गोसेवा, ब्रज की पहाड़ियों, वनों और पवित्र कुंडों के संरक्षण तथा यमुना और अन्य जलस्रोतों के पुनरुद्धार के लिए काम किया।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक योगदान

- उन्होंने हरिनाम संकीर्तन को बढ़ावा दिया और राधारानी ब्रज यात्रा का आयोजन किया।
- उनकी रचनाओं में 'ब्रज भाव मालिका' और 'स्वर वंशी के शब्द नूपुर के' शामिल हैं। उन्होंने 'राधा सुधा निधि' का हिंदी अनुवाद भी किया।

सम्मान एवं विरासत

- उन्हें आध्यात्मिक और सामाजिक सेवा के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
- मार्च 2024 में ब्रजशरण दास बाबा को मान मंदिर के महंत के रूप में उनका उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया।